अम्बर बाँचे पाती

कृष्णा वर्मा

अम्बर बाँचे पाती

(कृष्णा वर्मा के 683 हाइकु)

अम्बर बाँचे पाती

(हाइकु-संग्रह)

कृष्णा वर्मा

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812 / 9818988613
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com
website : www.ayanprakashan.com

•

मूल्य : 200.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2014 © कृष्णा वर्मा

AMBAR BANCHE PATI (Haiku)
by Krishna Verma

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

मेरी बात

कम शब्दों में अर्थपूर्ण बात कहने के सौन्दर्य ने मुझे सदैव ही आकर्षित किया है। बचपन से दादी का साथ मेरा परम सौभाग्य रहा। किसी भी बात को अधिक विस्तार से न कह कर केवल एक कहावत में गहराई का छोर पकड़ाना आता था उन्हें। उम्र के साथ-साथ मेरे अनुभवों का योग भी बढ़ता गया। मन में उद्‌गार उमड़ते और उमड़-घुमड़कर वहीं शांत हो जाते; क्योंकि मेरी कलम ने अभी तक कुछ कहना ही नहीं सीखा था। वर्ष 2008 में मैं 'हिन्दी राइटर्स गिल्ड' संस्था (टोरोंटो) से जुड़ी, धीरे-धीरे कलम बोलना सीखने लगी और शुरू हुआ यूँ मेरे लेखन का सफर।

मैं सदा ऋणी रहूँगी हिन्दी राइटर्स गिल्ड की जिनके सौजन्य से वर्ष 2011 में प्रतिष्ठित साहित्यकार आदरणीय काम्बोज जी को पहली बार गिल्ड की, मासिक गोष्ठी में सुनने और सुनाने का अवसर मिला। उन्होंने जापानी छंदों की चर्चा करते हुए हाइकु लिखने की विधा से परिचित कराया। पाँच-सात-पाँच केवल सत्रह वर्ण, जिसमें अपनी बात कहने की क्षमता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। अभी इस विधा में लिखने का सोचा भी नहीं था कि हिमांशु जी का ई-मेल से संदेश मिला जिसमें मेरे लेखन को भावपूर्ण बताते हुए उन्होंने अपने भारत लौटने से पहले दो-चार हाइकु लिख भेजने की इच्छा व्यक्त की और हिन्दी हाइकु के कुछ लिंक्स भी भेजे। हाइकु पढ़कर मैं भाव विभोर हो गई। विचारों की सामग्री एकत्र कर कुछ समझ न होते हुए भी इस प्रयास में जुट गई और कुछ हाइकु लिख डाले। 19 दिसम्बर 2011 को नेट : हिन्दी हाइकु पर पहली बार अपने हाइकु देखकर मन को अनूठी खुशी मिली। बेहतरीन हाइकुकारों की टिप्पणियों ने मेरे आत्मबल को और बढ़ा दिया। यहीं से प्रारम्भ हुई मेरी हाइकु-यात्रा।

हिमांशु जी जैसा व्यक्तित्व आज के समय में मिलना सौभाग्य की बात

है। इनके सहयोग और मार्गदर्शन के बिना मेरा हाइकु लिखना असम्भव था। अभी कुछ दिन पहले ही हिमांशु जी की ढाई वर्षीया पौत्री आरोही और नव जन्मी आर्या भी मेरे हाइकु गढ़ने में सहायक हुईं। फूल-प्यारी बच्चियों से मिलते ही नन्हे-मुन्नों पर स्वत: कुछ हाइकु लिखे गए जिनमें पहला हाइकु था- आर्या आरोही / घर के अँगना ज्यों / चम्पा औ जूही। हिन्दी हाइकु और त्रिवेणी के निरंतर लिंक्स मिलते रहने से लेखन में रुचि बढ़ती गई। जीवन के प्रत्येक पहलू को छूते आदरणीय डॉ. सुधा गुप्ता जी तथा रामेश्वर काम्बोज जी के प्रभावशाली हाइकु, डॉ. भावना कुँअर जी के प्राकृतिक छटा बिखेरते सुन्दर हाइकु पढ़ने का अविराम अवसर मिलता रहा। डॉ. हरदीप संधु जी के हाइकुओं का क्या कहूँ- विदेश में रहते हुए भी उनमें सोंधी महक अपनी मिट्टी की ही आती है। उनके पंजाबी के हाइकु मुझे मेरे अतीत में ले जाते हैं। पंजाब में जन्मी और शैशव काल से दिल्ली में रहने के कारण मैं पंजाब से उतना ही जुड़ पाई जितना माँ और दादी से सुना। हरदीप जी के हाइकु मेरी सुनी बातों को साकार करते हैं। 'यादों के पाखी' हाइकु संग्रह, 'अलसाई चाँदनी', सेदोका संग्रह तथा 'उजास साथ रखना' चोका संग्रह में मेरी रचनाओं को स्थान देकर सम्पादकीय टीम : रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', डॉ. भावना कुँअर, तथा डॉ. हरदीप संधु जी ने मेरा उत्साह चौगुना कर दिया। रचना श्रीवास्तव जी के उम्दा हाइकुओं ने हमेशा गहरे छुआ। 34 हाइकुकारों के साथ मेरे हाइकुओं को भी अपने अवधी रूपांतर में स्थान देकर आपने मेरी ऊर्जा को बढ़ावा दिया। कमला निखुर्पा, डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा, अनिता ललित, अनीता कपूर और शशि पाधा जी के खूबसूरत हाइकु से कौन प्रभावित नहीं होता! डॉ. अनीता कपूर और रचना श्रीवास्तव के सम्पादन में प्रकाशित 'आधी आबादी का आकाश' हाइकु संग्रह में 62 हाइकुकारों में मेरा नाम सम्मिलित कर मेरा मान बढ़ाया। मैं आप सब की हृदय से आभारी हूँ। और उन तमाम हाइकुकार मित्रों का हार्दिक धन्यवाद, जिन्हें नित्य पढ़कर लाभ उठाती हूँ तथा जिनकी टिप्पणियाँ सदैव मेरा मनोबल ऊँचा करती हैं।

मैं आभारी हूँ हिन्दी राइटर्स गिल्ड के संस्थापक सदस्य एवं निदेशक, टोरोंटो के प्रशंसनीय साहित्यकार, साहित्यकुंज नेट (वेब पत्रिका) के सम्पादक, तथा भूतपूर्व सम्पादक (हिन्दी-टाइम्स) श्री सुमन कुमार घई का जिन्होंने समय-समय पर मेरी कविताएँ, हाइकु, लघुकथाओं को हिन्दी टाइम्स में तथा

अपनी पत्रिका साहित्यकुंज में प्रकाशित कर हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया। यदि आज से पाँच वर्ष पूर्व हिन्दी टाइपिंग का लिंक भेज कर सुमन जी हिन्दी टाइपिंग सिखाने में मदद न करते तो आज मेरा कार्य इतनी सरलता से ना हो पाता।

टोरोंटो की जानी-मानी लेखिका, हिन्दी राइटर्स गिल्ड की संस्थापक सदस्या एवं निदेशिका और मेरी प्रिय मित्र डॉ. शैलजा सक्सेना यदि मुझे इस हाइकु संकलन के लिए प्रेरित न करतीं और हाइकु चयन जैसे असहज कार्य को करने की पहल न करतीं तथा मेरे बड़े भाई तुल्य रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी पुस्तक के प्रकाशन की तमाम बारीकियों में सहयोग ना देते तो आज यह पुस्तक आपके हाथ में न होती। यह बताते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि 'हिन्दी राइटर्स गिल्ड' संस्था (टोरोंटो) से जुड़कर मैंने लिखना सीखा और आज मेरी यह पुस्तक इस संस्था द्वारा प्रकाशित ग्यारहवीं पुस्तक है।

मेरे पति अनिल वर्मा, पुत्र अभिमन्यु, कुणाल, पुत्रवधु ऋचा ने सर्वथा मेरे लेखन को बढ़ावा दिया। मेरी बेटी स्वरूप पुत्रवधू ने न केवल बढ़ावा दिया अपितु सदा मेरे लेखन की श्रोता तथा कम्प्यूटर के कार्यों में सहायक रही। मेरा परमप्रिय छह वर्षीय पौत्र ईशान, जिसकी भोली प्यारी बातें पल-पल मेरा मन मोहती हैं, जो सर्वदा मेरे लेखन की गति बना। मुझे तन्मय हो कर लिखता-पढ़ता देख एक दिन धीमे से पूछ ही बैठा- Dadi, why are you working so hard? Are you going to the college next year?

साहित्य-प्रेमी और अयन प्रकाशन के श्री भूपाल सूद जी की भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने बहुत सारी व्यस्ताओं के बीच मेरे संग्रह को प्राथमिकता से प्रकाशित करने का आश्वासन दिया।

मैं अपनी प्रथम काव्य-कृति 'अम्बर बाँचे पाती' अपने प्रिय जनों को सम्मान सहित समर्पित करती हूँ। आशा करती हूँ कि आपको मेरा यह प्रथम प्रयास पसन्द आएगा।

30 जुलाई, 2014

- **कृष्णा वर्मा**
रिचमण्डहिल, टोरोंटो, केनेडा

कृष्णा वर्मा जी के हाइकु मन में उठते कोमल भावों की उर्मियों की शाब्दिक अभिव्यक्ति हैं। प्रकृति की सुंदरता में चाँद, तारों से लेकर ऋतुओं के बदलते रंगों में ढला संकलन, हाइकु की सम्पूर्णता की ओर इंगित करता है। सत्रह वर्णों में न केवल पूर्ण भाव को व्यक्त करने की कला बल्कि कई बार मन को कचोटने वाला प्रश्न छोड़ जाना हाइकु की सुंदरता है। जैसे कि- ◆संतान व्यस्त / एकल बुढ़ापे में / जीवन त्रस्त। इसी तरह केनेडा में रहने के कारण प्रकृति-वर्णन में यहाँ की ऋतुएँ स्वत: उतर आई हैं- ◆क्या हिमवृष्टि / कायनात दमकी / चकित सृष्टि। ◆चमका सूर्य / हीरों जड़ी शाखाएँ / झलके नूर। ◆हिम यूँ झड़ी / शाख-शाख लिपटी / माणिक लड़ी।

विदेशों में बाज़ारवाद से उपजे उत्सवों पर प्रश्न उठाती हुई कवयित्री पूछती हैं- ◆वो प्रीत कैसी / मोह ताज होती जो / ख़ास तिथि की। दूसरी ओर उत्सव सर्ग में भारतीय संस्कृति सार्वभौमिकता का प्रमाण है। प्रवासी हृदय यूँ ही संस्कृति के तिनकों को एकत्र करके परदेस में नीड़ सृजन करता हुआ विदेशों में जन्मी अगली पीढ़ी पर टिप्पणी करता है- ◆लाख छू आएँ / चिड़ियाँ आकाश को / प्यार नीड़ से।

बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाले इस हाइकु संकलन पर कृष्णा वर्मा जी को हार्दिक बधाई!

- सुमनकुमार घई, ओंटारियो, कनाडा

समर्पित है यह काव्य कृति
आदरणीय भाई
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' जी को
जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन ने
सदैव मुझे आत्मबल दिया।

अम्बर बाँचे पाती : अनुभूतियों का इन्द्रधनुष

साहित्य किसी एक व्यक्ति का नहीं, एक देश का नहीं वरन् पूरे मानव-समाज का होता है। साहित्य की संस्कृति, संश्लिष्ट रूप में मानव संस्कृति होती है। किसी एक कालखण्ड में रचा हुआ होने पर भी साहित्य में नित्य नूतनता ही उसका प्राण है। उसकी दृष्टि सुदूर अतीत से लेकर व्यापक भविष्य तक फैली हुई होती है। कालिदास ने कहा है- 'कोई वस्तु पुरानी है, अतः आदरणीय है और कोई वस्तु नई है, अतः ग्राह्य नहीं है, इस प्रकार का विचार बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं होता है। विद्वान् तो गुण देखकर किसी वस्तु को ग्रहण करते हैं।' *(काव्यशास्त्र के मानदण्ड : डॉ. रामनिवास गुप्त, पृष्ठ-12)*

साहित्य की हर विधा के बारे में यह ध्रुव सत्य है। हाइकु के बारे में भी यह लागू होता है। महाविद्यालयों के वे हिन्दी-प्रवक्ता जो वैश्वीकरण की जुगाली तो करते हैं, साथ ही हाइकु का विरोध भी फूहड़ और दरिद्र भाषा में करते हैं, भले ही उनके घर में विदेश-निर्मित सामान भरा पड़ा हो। हिन्दी के छात्रों को कूपमण्डूक बनाने में इनकी मुख्य भूमिका है। दूसरी ओर अमेरिका कैनेडा जैसे देश भी हैं, जहाँ हाइकु कक्षा 5 और 6 के पाठ्यक्रम में भी शामिल हैं। हिन्दी का एक वर्ग वह है, जो चार पंक्तियाँ हिन्दी कविता की नहीं लिख पाता, फिर भी हाइकु विरोध का परचम सँभाले हुए है या दूसरा वर्ग, जो अच्छी कविता तो लिखता है; लेकिन उसको डर सताता है कि यदि वह हाइकु लिखेगा तो कहीं उसका लेखन समर्थ रचनाकारों के सामने दोयम दर्जे का न बन जाए। कुछ यश-लिप्सा से अभिशप्त ऐसे लोग भी हाइकु में आ गए हैं, जो कवि नहीं हैं, शब्दों के मिस्त्री हैं, ऊल-जलूल लिखकर इस विधा को नुकसान पहुँचा रहे हैं। वे हाइकु का गला घोंटकर उसको दोहा, सोरठा, ग़ज़ल बनाने का विलोम प्राणायाम (अनुलोम-विलोम

नहीं) करके खुद को मीरी घोषित करने में जी-जान से जुटे हैं। कुछ दस-बीस हाइकु लिखकर तरह-तरह के फतवे जारी करने में लगे हैं और खुद को हाइकु का भाग्य-विधाता मानने का भ्रम पाले हुए हैं। इनके बीच वे सजग रचनाकार भी हैं, जो इस हुड़दंग-भरी भीड़ से कुछ हटकर रच रहे हैं। कृष्णा वर्मा उन्हीं में से एक हैं। भारत के अतिरिक्त कैनेडा के रिचमण्डहिल और उसके आसपास का प्राकृतिक सौन्दर्य इनके हाइकु में अनेक रूपों में दृश्यमान् है।

1. 'उजास हँसे' अध्याय में प्रकृति के मनोरम चित्र मन को मोह लेते हैं। अम्बर से झरती रस की धारा, भिनसार में टूटती स्वप्न की साँसें, आकाश की कलाई में बँधी सूर्य की राखी सूर्योदय के सौन्दर्य को उकेरने में सक्षम हैं। कल्पना का नूतन समावेश चित्रांकित कर देता है-

◆पूनो की रात / अम्बर से झरती / रस की धार।
◆भिनसार में / टूटीं स्वप्न की साँसें / पलकें खुलीं।
◆ऊषा ने बाँधी / आकाश की कलाई / सूर्य की राखी।

साँझ और रात भी कम सुन्दर नहीं। साँझ होते ही स्वर्णिम धूप के पन्ने गुलाबी होने लगे हैं, कहीं सिन्दूरी साँझ होने पर आकाश का लोहित होना और धूप का लेटना, घुली चाँदनी का आँगन के कसोरे में उतरने का रूपक, सर्द चाँदनी का रात भर चुम्बन उलीचना अभिव्यक्ति सौन्दर्य में रंग भर देते हैं-

◆साँझ ढली तो / स्वर्ण धूप के पन्ने / हुए गुलाबी।
◆सिंदूरी साँझ / गगन है लोहित / लेटी है धूप।
◆घुली चाँदनी / आँगन के कसोरे / महके प्यार।
◆सर्द चाँदनी / उलीचे रात भर / भीगे चुम्बन।

यही नहीं सितारों का नदिया की छाती पर आँख-मिचौनी खेलने का मानवीकरण अभिभूत कर देता है। ऐसे चित्रण सिर्फ हाइकु छन्द की ही नहीं, बल्कि अच्छी कविता की भी शक्ति हैं-

◆खेलें सितारे / नदिया की छाती पे / आँख-मिचौनी।

2. 'नभ का आँगन' में कवयित्री का प्रकृति-प्रेम अद्‌भुत सौन्दर्य के साथ ही प्रकृति के स्वार्थपूर्ण दोहन से उपजी समस्याओं की ओर भी ध्यान दिलाता है। नदी-जल में नहाकर सूर्य को अर्घ्य देती हवाओं की पावनता का

बोध किसी दूसरे ही भाव-जगत् की यात्रा कराता है। अल्पतम शब्दों में हाइकु में इतनी सारी बात कह जाना कृष्णा वर्मा के भावबोध की गहराई का अहसास कराता है-

◆नदी-जल में / नहा के हवाएँ दें / सूर्य को अर्घ्य।

पेड़ कटने पर बेघर हुए पक्षियों की पीड़ा, उनके गीतों की खुशी छिन जाना, वन कटने पर बादलों के सूखे होंठ, पत्तों के कानों में लोक-व्यथा को हवा द्वारा कहना आसन्न संकट की ओर संकेत ही नहीं, बल्कि चेतावनी है।

◆पेड़ जो कटे / बने कहाँ घोंसला / टूटा हौसला।
◆कैसा उत्थान ? / छीनते परिंदों के / नीड़ व गान।
◆शुष्क हुए हैं / बादलों के अधर / वन लापता।
◆पत्तों के कानों / हवा फुसफुसाए / लोक व्यथाएँ।

3. 'रूप सलोना' में फूलों का मनमोहक सौन्दर्य ही नहीं, प्रकृति का अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष भी है। यही संघर्ष मानव-मन के लिए सबसे बड़ी प्रेरणा है। फूलों का रूप-सौन्दर्य और सुगन्ध जीवन-पथ का निर्माण करते हैं-

◆उमंगें ज़िन्दा / महकने की चाह / बनाए राह।

अमलतास तो लगता है कि धूप का ही दूसरा रूप है। टेसू लगता है पूरे जंगल में अपनी प्रेम-अगन के कारण दहक रहा है। काँटों में खिला गुलाब अपने संघर्ष को भी रूपायित करता है-

◆धूप का रूप / ओढ़े अमलतास / लगे अनूप।
◆प्रेम-अगन / दहके टेसू मन / महके वन।
◆टेसू का छौना / नारंगी झबले में / लगे सलोना।
◆काँटों से घिरा / फिर भी निष्कंटक / खिले गुलाब।

4. 'मौसम भेजे पाती' में भारत के वैविध्यपूर्ण मौसम को कवयित्री ने तन्मयता से चित्रित किया है। कहीं वह धूप से नाराज़ कोहरे का दुपट्टा ओढ़े भोर है, कहीं पीले नारंगी रंग के साथ व्यथा को कहते पत्ते हैं, कहीं फूलों की खुशबू है, जो हवा के काँधों पर सवार है, बाँसों के झुरमुट में राग बजाती हवाओं का सहज चित्रण, कहीं डालियों के अंक लगकर बतियाती बातूनी पत्तियाँ हैं-

◆भोर ने ओढ़ा / कोहरे का दुपट्टा / धूप नाराज़।

◆पल्लव-कथा / पीला-नारंगी रंग / मन की व्यथा।

◆फूलों की गंध / हवा के काँधों पर / सवारी करे।

◆छुएँ हवाएँ / बाँसों के झुरमुट / राग बजाएँ।

◆नन्हीं पत्तियाँ / डालों के अंक लग / करें बतियाँ।

गर्मी का चित्रण भी अनूठा है। ताल-तलैया सूख गए, पवन प्यासा और व्याकुल हो उठा है। वर्षा का आगमन होता है। खुलकर हँसते बादल धरा को भिगो जाते हैं। कहीं बादलों की ओट में तारों से कुट्टी करके छुपा चाँद है। हर कहीं भाषा की कोमलता तो है ही, कल्पना का चित्र-सा उकेरा सौन्दर्य भी है।

◆पवन-प्यासा / सूखे ताल-तलैया / फिरे व्याकुल।

◆खुलके हँसें / बादल जो नभ में / घना भिगोएँ।

◆बादल ओट / छुपा यूँ चाँद ज्यों हो / तारों से कुट्टी।

शीतकाल इतना प्रभावी है कि ठण्डी शिलाओं को छूकर हवाएँ भी काँपने को बाध्य हैं। सूर्य को ऐसा चाँटा जड़ दिया गया कि वह आसपास नज़र ही नहीं आता। चारों तरफ सन्नाटा छा गया है। अचानक चाँटा जड़ने पर ऐसा ही तो होता है, एकबारगी चुप्पी छा जाती है-

◆काँपें हवाएँ / छुएँ जो सीत-भीगी / नंगी शिलाएँ।

◆छाया सन्नाटा / शीत ने मारा जब / सूर्य को चाँटा।

सर्दी की अतिशयता में झीलें और नदियाँ जब जम जाती हैं; तब लगता है जैसे श्वेत लिहाफ ओढ़ लिया हो-

◆नदिया क्लांत / ओढ़े श्वेत लिहाफ / सोई हो शांत।

ऊपर के ये चार अध्याय प्रकृति पर ही केन्द्रित हैं। कवि एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने समाज से असम्पृक्त नहीं रह सकता है। उसके भी सुख-दु:ख हर्ष-विषाद हैं, उसकी भी सामाजिक चिन्ताएँ हैं। अन्य तीन अध्यायों में कुछ जगबीती तो कुछ आप बीती भी है।

5. 'रिश्तों की डोर' में कवयित्री ने अपने व्यावहारिक संसार की भी पड़ताल की है। प्यार के लिए रिश्तों के बीच एक अन्तर्धारा होनी चाहिए। धारा का सूखना, रिश्तों का निष्प्राण होना है-

◆सूखी है नमीं / प्यार की हुई जब / रिश्तों में कमी।

माँ का महत्त्व सर्वाधिक है। हवा का हल्का-सा स्पर्श भी माँ की याद दिला जाता है। माँ की एक ही मुस्कान सारी थकान को छूमन्तर कर देती है। अपने सारे दर्द लगता है माँ आटे में गूँध देती है-

◆माँ याद आए / बालों में अँगुली जो / हवा फिराए।

◆माँ की मुस्कान / हर लेती पल में / सारी थकान।

◆बेबसी पीती / दुखों को धोए, गूँधे / आटे में दर्द।

छोटे बच्चों का संसार घर को वास्तव में घर बनाता है। नाती-पोते घर में आकर खुशियों के बीज बोते हैं। कृष्णा जी के पौत्र ईशान का आत्मिक स्पर्श मैंने गुड़गाँव और रिचमण्ड हिल दोनों स्थानों पर देखा है। बचपन और बचपन की यादें इसी कारण अमराई की तरह से हमको महका जाती हैं-

◆नन्हे फरिश्ते / कुटुम्ब के खिलौने / घर का स्वर्ग।

◆आ नाती पोते / घर-आँगन में ये / खुशियाँ बोते।

◆महका जाएँ / बचपन की यादें / ज्यों अमराई।

दूसरी ओर वे रिश्ते भी हैं, जिनको हम उम्रभर ढोते हैं, उनकी अनचाही कीमत चुकाते हैं। फिर भी ये रिश्ते न जाने कब हमारे हाथ से निकल जाते हैं। हर आदमी को कुछ अनचाहे रिश्ते ढोने की सज़ा भुगतनी ही पड़ती है-

◆रिश्ते अनाम / उमर की तमाम / भरपाई में।

◆फिसल गए / बरसों सँवारे जो / रिश्ते बेचूक।

◆ढो-ढो के मरे / रिश्तों की मनुहार / अजब सज़ा।

6. 'जीवन-तरंग' हमारे जीवन का सच्चा आईना है। आँखों की नमी जीवन का वह उर्वर पक्ष है, जिसमें मानवीय रिश्ते पनपते हैं। यह नमी जीवन का सौन्दर्य है। जब यह नमी आँसू बनकर उतरती है, तो सारा हाल कह देती है। बीती बातों को याद करने से जब मन आहत होकर धधकता है, तो यही आँसू उस दु:ख को बुझाने का काम करते हैं-

◆आँखों की नमी / बंजर ना होने दे / रिश्तों की ज़मीं।

◆आँसू कमाल / बेजुबाँ होकर भी / कह दें हाल।

◆याद की तीली / फिर सुलगा गई / बीती बतियाँ।

◆आहत पल / जब-जब धधकें / बुझाएँ आँसू।

यहीं एक यह भी कटु सत्य उद्घाटित होता है कि अपने कुछ दें या

न दें, धोखा अवश्य देते हैं।

◆कुछ दें ना दें / धोखा अवश्य देंगे / तेरे अपने।

आदमी के जीवन के साथ व्यथा भी सदा जुड़ी रहती है। कृष्णा वर्मा ने सिसकियों के इस अटूट सम्बन्ध को जन्म से ब्याही सिसकियाँ कहा है। इनकी यह उद्‌भावना नवीनता के साथ एक और भी कड़वी सच्चाई को समेटे है कि जीते जी चाहे कितने भी दु:ख दिए हों, मरने पर हम उनको फूल ज़रूर अर्पित करते हैं-

◆जन्म से ब्याहीं / कंठ से सिसकियाँ / छोड़े ना साथ।

◆जीते जी शूल / मरने पर फूल / अजब रस्में।

फिर भी जब तक आदमी का हौसला ज़िन्दा है, तब तक वह हार नहीं मानता है। यही जीवन है-

◆हौसला ज़िंदा / समंदर को लाँघे / नन्हा परिंदा।

भारत उत्सवों और पर्वों का देश है। यही विशेषता विश्व में हर जगह हर भारतीय को जोड़े हुए है।

7. 'उत्सवा' में कवयित्री ने इसी उत्सवधर्मिता को चित्रित किया है। फागुन की मस्ती, प्रिय की प्रतीक्षा, दीपावली का ज्योतिर्मय उल्लास अनुकरणीय है-

◆रोम-रोम में / गंध चंदनी घुली / फाल्गुन आए।

◆बाट पिया की / कोरों पे रख फाग / तकते नैन।

◆तन्वी-सी बाती / दीप-नेह से भीगी / जले प्यार में।

◆दीप-शिखाएँ / फैलाएँ शुभ्रता औ / चाँद लजाए।

करवाचौथ का पति-पत्नी को अनगिन बन्धनों में बाँधने वाला विश्वास, रक्षाबन्धन का प्यार समेटे भाई की लम्बी उम्र की प्रार्थना सबको कहीं न कहीं बाँधे हुए हैं-

◆चाँद धरा का / जिए चंद्रमा संग / जनमों तक।

◆कोमल धागा / दुआओं से सींचा है / कलाई बाँधा।

◆भाई जो आएँ / क्षितिजों तक लम्बी / होएँ भुजाएँ।

कृष्णा वर्मा की अम्बर को बाँचती यह पाती, उनकी बहुरंगी अनुभूतियों का इन्द्रधनुष है। अब तक जो संग्रह मेरे सामने आए हैं, उनमें डॉ. सुधा गुप्ता जी के सभी संग्रह उत्तम काव्य के आस्वाद की अनुभूति

कराते हैं। इनके बाद डॉ. भावना कुँअर (तारों की चूनर-2007, धूप के खरगोश-2012), डॉ. हरदीप कौर सन्धु (ख्वाबों की खुशबू-2013) और रचना श्रीवास्तव (भोर की मुस्कान-2014) के संग्रहों ने हाइकु-जगत् को बहुत प्रभावित किया है। नि:संकोच कहना चाहूँगा कि कृष्णा वर्मा का 'अम्बर बाँचे पाती' को इसी परम्परा में रखा जाएगा। सहृदय पाठक यह महसूस कर सकेंगे कि हाइकु में भी अन्य विधाओं की तरह प्रभावित करने की शक्ति है।

- रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
टॉवर एफ, 305 छठा तल, मैक्सहाइट,
सैक्टर-62, कुण्डली-131023, सोनीपत (हरियाणा)
जन्माष्टमी, 17 अगस्त, 2014

अनुक्रम

1. उजास हँसे 0
2. नभ का आँगन 0
3. रूप सलोना 0
4. मौसम भेजे पाती 0
5. रिश्तों की डोर 0
6. जीवन-तरंग 0
7. उत्सवा 0

1. उजास हँसे

1.
हँसा प्रभात
सुषुप्त कोमल-से
पल्लव जागे।

2.
नवल पंख
उड़ चले रश्मि के
अलसुबह।

3.
भिनसार में
टूटीं स्वप्न की साँसें
पलकें खुलीं।

4.
षोडशी बाला
सजी कंचन काया
चढ़ी द्रुमों पे।

5.
उषा किशोरी
सिन्दूरी आँचल ले
उतरी धरा।

6.
नूतन उषा
प्राची की खिड़की से
नित्य झाँकती।

7.
ऊषा ने बाँधी
आकाश की कलाई
सूर्य की राखी।

8.
नवेली भोर
नारंगी परिधान
मधु मुस्कान।

9.
निश्चिंत रवि
बदली के पल्लू में
सिमट सोया।

10.
भोर सिंदूरी
शाम सुरमई, हों
स्वप्न साकार।

11.
किसने बोया
अम्बर की क्यारी में
सूर्य का बीज।

12.
सूर्य ने ताना
स्वर्णिम शामियाना
धरा दुल्हन।

13.
साँझ का सूर्य
सागर की गोद में
मुखड़ा लाल।

14.
डूबता रवि
उम्र का एक दिन
साथ ले जाए।

15.
संध्या-आँगन
ढलता है सूरज
उगते तारे।

16.
साँझ को बाँधे
निशा निज बाँहों में
गिरने ना दे।

17.
साँझ की सीढ़ी
उतरे चुपके से
रजनी वधू।

18.
साँझ ढली तो
स्वर्ण धूप के पन्ने
हुए गुलाबी।

19.
सिंदूरी साँझ
गगन है लोहित
लेटी है धूप।

20.
जुड़े रात से
साँझ का रिश्ता, देते
तारे बधाई।

21.
चंद्रमा दूल्हा
नीले मंडप तले
तारे बाराती।

22.
हिम चाँदनी
स्वर्ग की निःशब्दता
धरा पे लाई।

23.
पूनो की रात
अम्बर से झरती
रस की धार।

24.
पूनो की रात
चाँद की चाँदनी से
भिगोए धरा।

25.
टपकी ओस
भीगे प्यासी दूब के
शुष्क अधर।

26.
श्वेत चंद्रिका
रात के आँगन आ
भरे उजास।

27.
घुली चाँदनी
आँगन के कसोरे
महके प्यार।

28.
सर्द चाँदनी
उलीचे रात भर
भीगे चुम्बन।

29.
चाँद का छौना
ओस धुली रात में
भरे चौकड़ी।

30.
चाँद की बाती
अँधियारी राहों की
देती गवाही।

31.
चाँद का जोगी
भरता कमण्डल
सरि जल से।

32.
रात की डोरी
थाम के अन्धकार
पग पसारे।

33.
दबी-दबी सी
रात की आहें सुने
सिर्फ आसमाँ।

34.
उन्मन सूनी-सी
शिशिर भीगी रात
ढूँढती प्रात।

35.
खामोश तुम
सिसकती हैं रातें
रिसें जो घाव।

36.
स्वप्न-संसार
निंदिया की बाँहों में
पाए आकार।

37.
व्योम में तारे
पिरो दिए रात ने
चाँद भी टाँका।

38.
रोज़ जन्मती
रात की कोख एक
नया सूरज।

39.
निशा क्या व्यापी
सितारों का शहर
लगे आकाश।

40.
जले औ बुझे
अँधेरे के वक्ष पे
तारों की चुप्पी।

41.
खेलें सितारे
नदिया की छाती पे
आँख-मिचौनी।

42.
चढ़े सितारे
लहरों की पीठ पे
काँपा बदन।

43.
काँधों पे ओढ़े
सितारों की चादर
रात टहले।

44.
नींद जा छिपी
रात की सराय में
ढूँढते स्वप्न।

45.
थकी उनींदी
केसरी रंग रँगी
रेशमी साँझ।

46.
रात ना होती
कौन सजाता स्वप्न
नई भोर के।

47.
सपने भरे
उनींदी अखियों में
शांत यामिनी।

48.
प्यासे तृण की
शबनम के मोती
बुझाएँ तृष्णा। ❑

2. नभ का आँगन

1.
सुधा से भरा
नील घट गढ़ता
कौन कुम्हार !

2.
नीली छतरी
चाँद सितारों-जड़ी
धरा ले खड़ी।

3.
नन्हा चाँद
आकाश-के आँगन
अकेला जगे।

4.
नभ पे तिरें
सलेटी अँधेरे औ
छिटकें तारे।

5.
विकल धरा
घर था हरा-भरा
दोहन हुआ।

6.
घट-घट में
सुख बसा धरा के
मोल तो जानो।

7.
धरा की कोख
अन्न-धन की खान
तू पहचान।

8.
पेड़ जो कटे
बने कहाँ घोंसला
टूटा होंसला।

9.
कैसा उत्थान ?
छीनते परिंदों के
नीड़ व गान।

10.
कैसा सृजन
प्रकृति को उजाड़
बुने कफन।

11.
शुष्क हुए हैं
बादलों के अधर
वन लापता।

12.
डाल कहाँ जो
अब पीपल पर
बनें घोंसले।

13.
थक के सोए
किस पीपल तले
जा दोपहरी।

14.
कन्द ना मूल
पत्र ना फल-फूल
जीवन धूल।

15.
कटे जो वन
ऑक्सीजन हलाक
साँसें हैरान।

16.
डगमगाया
जैविक संतुलन
नष्ट जो वन।

17.
घोंसले स्तब्ध
मातमी राग गाएँ
भौचक वृक्ष।

18.
करनी पड़े
खुदकुशी सायों को
कटें जो वृक्ष।

19.
ऐसा लगाया
कुदरत ने चाँटा
छाया सन्नाटा।

20.
रुआँसे नीड़
कहाँ मिलेगा ठौर
वृक्षों के बिन।

21.
तोड़ा क्रूरों ने
हरी छतरियों को
छाँव निमानी।

22.
छीनो न खुशी
जीवनदायिनी की
न दो विषाद।

23.
उन्मत्त तरु
लिपटे शाख पात
माँ संग शिशु।

24.
दूब नहाई
भीग प्यार की ओस
पवन जले।

25.
तरु ने ताना
पल्लवों का वितान
पसरी छाया।

26.
तरु की छाया
उतर करे स्नान
सरि के जल।

27.
अडिग जिएँ
वक्ती झंझावातों में
निडर पत्ते।

28.
पत्ते डाली के
विछोह को सहते
सदा हँस के।

29.
आतुर शाखें
लचकतीं चूमने
धरा-चरण।

30.
पत्तों के कानों
हवा फुसफुसाए
लोक व्यथाएँ।

31.
हवा के झोंके
पत्तों को शाखों पर
नृत्य कराएँ।

32.
हवा दुबकी
गरमी से आतुर
जलती देह।

33.
हवा छिछोरी
छेड़े बेबस कली
सिहरी जाए।

34.
बूँदों का जाम
पी के लड़खड़ाई
दीवानी हवा।

35.
जड़े थप्पड़
खुले दरवाज़े को
तड़ से हवा।

36.
तरु करते
हवाओं को प्रणाम
नत मस्तक हो।

37.
पगली हवा
लुकी कौन तंदूर
तन जलाया।

38.
पवन गाए
दाद दें टहनियाँ
शीश डुलाएँ।

39.
बातें करती
जब हवा पत्तों से
खनके हँसी।

40.
हवा बौराई
मथ डाला सागर
मथनी बिना।

41.
नदी-जल में
नहा के हवाएँ दें
सूर्य को अर्घ्य। ❑

3. रूप सलोना

1.
अनवरत
हौले-हौले झरते
गुलमोहर।

2.
रूप सलोना
हल्द वसन ओढ़े
ऋतु का छौना।

3.
अमलतास
के, पीले किए हाथ
ऋतु ने आज।

4.
धूप का रूप
ओढ़े अमलतास
लगे अनूप।

5.
सूर्य का ताप
सोखा अमलतास
पुख्ता जिगर।

6.
कुन्दन काया
स्वर्णिम आभूषण
चित्त लुभाते।

7.
कर्ण झुमके
गले कनक माल
शोभा कमाल।

8.
प्रेम-अगन
दहके टेसू मन
महके वन।

9.
जन्मा पलाश
मुखड़े पे लालिमा
होंठों पे हास।

10.
टेसू का छौना
नारंगी झबले में
लगे सलोना।

11.
खिला जो पर्ण
केसरी बोछारों ने
भिगोया वन।

12.
वन में शोर
ढाक को रंग गई
नारंगी भोर।

13.
दहका गया
सूर्य का उष्ण स्पर्श
टेसू का गात।

14.
केसर मले
लावा-सा रूप धर
वन को छले।

15.
तेरा यौवन
भड़काए उन्माद
वाह पलाश।

16.
लाक्षा तरु पे
अनोखे अग्निकण
हर्षाएँ मन।

17.
पलाश आए
ऋतु के होंठों पर
सुर्खी लगाए।

18.
गालों पे हया
अधरों पर लाली
टेसू की डाली।

19.
धूप ने छुआ
तमतमाए पर्ण
ज्यों लाल वर्ण।

20.
खिले किंशुक
जंगल भौचक से
लगी क्या आग!

21.
फूला पलाश
रंगे धरा-आकाश
उड़े पराग।

22.
भगवा ओढ़े
जंगल खड़े शांत
तापस जैसे।

23.
वन का तन
रंगा प्रीत रंग से
तूने त्रिपर्ण!

24.
चूमें मुखड़ा
सुपर्णी का हवाएँ
लाली चुराएँ।

25.
पत्ते न गंध
सूरज करे तंग
ढाक प्रचंड।

26.
छलकी प्रीत
अनवरत झरा
ऋतु का मीत।

27.
गुलमोहर-
हथेली पर हिना
रचाता कौन ?

28.
स्वर्ग-सुमन
धरती के आँचल
टाँके ऋतु ने।

29.
रंगने लगा
नयनों में प्रीत के
स्वप्न सिंदूरी।

30.
काँटों से घिरा
फिर भी निष्कंटक
खिले गुलाब।

31.
तोड़ बाधाएँ
महकता गुलाब
दृढ़ विश्वास।

32.
करे संघर्ष
काँटों से जूझकर
खिलाए कली।

33.
उमंगें ज़िन्दा
महकने की चाह
बनाए राह। ❑

4. मौसम भेजे पाती

1.
हुई बाँझ सी
बैरी पतझड़ की
मार से डालें।

2.
पत्तों की साँसें
उखड़ें खिज़ाओं में
बैरी हवा से।

3.
सूखे पत्तों की
होती रूखी बारिश
पतझड़ में।

4.
ऋतु चटाए
पतझड़ को धूल
खिला के फूल।

5.
डालें उदास
छोड़ गए वे जिन्हें
किया आबाद।

6.
कैसा भूकम्प
क्रूर पतझड़ ने
तोड़े कुटुंब।

7.
क्या अपराध
बैरी पतझड़ ने
बनाया बाँझ।

8.
होगा मिलाप
कहें बिदाई वक्त
डालों से पात।

9.
लताएँ रोईं
वृक्षों के कण्ठ लग
काँधों पे सोईं।

10.
रोज़ ही लुटे
पतझड़ के हाथों
फिर ना मिटे।

11.
पगलाए-से
फिरें पात निमाने
छिने ठिकाने।

12.
पतझड़ ने
छीनी उम्र पत्तों की
झरें खामोश।

13.
पत्तों की फौज
ढूँढती नया ठौर
जत्थों में भागें।

14.
पत्तों की टोली
हवा के कांधे चढ़ी
मृत्यु की डोली।

15.
मन की व्यथा
नारंगी व निबुआ
रंगों में घुली।

16.
उड़ी फिरतीं
आवारा सी पत्तियाँ
हवा सहेजे।

17.
विवश पात
मौसम का आदेश
करें पालन।

18.
दुष्ट नियति
म्लान किया पत्तों का
कोमल दिल।

19.
पल्लव-कथा
पीला नारंगी रंग
मन की व्यथा।

20.
रंगत उड़ी
शिथिल हुई काया
विदा की घड़ी।

21.
शाखों पे पत्ते
जुदाई के गम से
हो रहे पीले।

22.
छोड़ें ना संग
कैसे नव पल्लव
लाएँ आनन्द।

23.
दो पीत पात
थामे डाली का हाथ
जीने की आस।

24.
जन्में थे जहाँ
छूटा है आज साथ
माटी होने को।

25.
नंगी शाखों पे
पंछियों के घोंसले
कंपन भरें।

26.
ठूँठ खड़े हैं
संतों की नाईं देके
सर्वस्व दान।

27.
तरु-शृंगार
क्रूर पतझड़ ने
छीना पल में।

28.
सुरसा बन
पतझड़ ने लीले
तरु के लाल।

29.
निस्संग होके
जी ना पाए पल्लव
चार दिन भी।

30.
टूटा बंधन
छूटा हाथ पत्तों का
लो डालियों से।

31.
पतझड़ ने
पंछी किए प्रवासी
नीड़ विषादी।

32.
ऋतु बदले
संदेश के वाहक
बने परिंदे।

33.
फूलों की गंध
हवा के काँधों पर
सवारी करे।

34.
पंछी चहकें
हो आभास ऋतु का
हुआ शृंगार।

35.
साँझ ढलते
प्रकृति का मिज़ाज
बदले रंग।

36.
पुष्पों की सेज
पलकों पे सजा के
मुस्काए दूब।

37.
फूल ना होते
किसके तन-मन
बसती गंध।

38.
फूलों से अँटीं
बगिया की क्यारियाँ
गंध ठुमके।

39.
आया बसंत
टूटेंगे संयम के
सारे विबंध।

40.
महके क्षण
अँचरा में बाँध के
लाया वसंत।

41.
फाग के कांधे
होके गंध सवार
मचाए रार।

42.
जड़ें पात पे
हीरे की कणियाँ जो
उतरे ओस।

43.
फूलों का गात
तितली चूम झूमे
नशे में धुत्त।

44.
छुएँ हवाएँ
बाँसों के झुरमुट
राग बजाएँ।

45.
जाने फूल क्या
कहे खुशबू के कान
महक उठे।

46.
फाग बहार
मर्यादा के बंधन
टूटे-बिखरे।

47.
फाग की मस्ती
उमड़ती उमंग
वासंती रंग।

48.
रंगी बहार
कायनात का कौन
है चित्रकार।

49.
सजे भू अंग
शृंगार-प्रसाधन
लाया बसंत।

50.
बसंत-कंत
हवा के दुपट्टे पे
छिड़के इत्र।

51.
ऋतु उमंगी
रस-भीनी गलियाँ
डोलते अलि।

52.
भीगी धरा के
अधरों पर खिले
खुशी के फूल।

53.
धानी औ पीली
चुनरी को वसुधा
ओढ़ के मस्त।

54.
सभी दिशाएँ
मस्ती छलके अंग
भईं बावरी।

55.
सरसों नाचे
खेत-खेत ओढ़के
हल्द दुकूल।

56.
मधुर तान
रोम-रोम व्यापी है
कूकी की आज।

57.
आया वसंत
आनन्द है अनंत
हिया मगन।

58.
दीप्त दिशाएँ
नवल युगागम
प्रीति श्वासों में।

59.
खिलीं उमंगें
भीगे हैं अहसास
झरता प्यार।

60.
ढुलके तुम
मेरी गीली कोरों से
मधु ऋतु में।

61.
ऋतु का शोर
भागा कुंडी खोल के
मन का चोर।

62.
बँधने लगी
कली अलि पाश में
अनमनी-सी।

63.
चटकी कली
पत्तियों की झालरें
बौराए अलि।

64.
गंध की डोली
पवन कहार के
काँधे पे झूली।

65.
उड़ी फिरे ले
महकता आँचल
किशोरी हवा।

66.
मुट्ठी में बाँध
बाँटे हवा सबको
अमृतप्राण।

67.
ओ ऋतुराज
कैसा गजब ढाया
उन्माद छाया।

68.
लौट ही आया
अवकाश के बाद
वसंतराज।

69.
रंगों की ओट
नटखट तितली
लिये उड़ती।

70.
काढ़े ऋतु ने
धरा आँचल पर
फूल मौसमी।

71.
जन्मीं कोंपलें
मतवाली शाखाएँ
सोहर गाएँ।

72.
तरु निहाल
डालों की गोद भरी
घर आबाद।

73.
चहकी शाख
गोदी ले किसलय
चूमती गाल।

74.
नन्हीं पत्तियाँ
डालों के अंक लग
करें बतियाँ।

75.
हवा के झोंके
लहरें, पत्तों को
नृत्य कराएँ।

76.
जन्मे प्रबाल
वृक्षों के आँगन में
लट्टू बहार।

77.
तन्वी तितली
रंगों का बोझ लिये
डोलती वन।

78.
सरसों फूली
पीत वसन तन
चंचल मन।

79.
हरी ओढ़नी
रंगी कशीदाकारी
क्या फुलकारी।

80.
आम्र पींग पे
कोयल को झुलाए
झोंका समीर।

81.
लचके डाली
पुष्प-पात गा राग
बजाएँ ताली।

82.
पुष्प-पल्लव
तरु नव निखार
दिव्य बहार।

83.
बाँटे महक
पवन ले उधार
पुष्प-मंडी से।

84.
गंध केसरी
ये संदेशा पवन
डाक से आया।

85.
चित सागर
धड़कन तरंगें
आया बसंत।

86.
बिन डोरी के
बँध गए उनसे
नैन कुँवारे।

87.
अधर मौन
मन का सच बोलें
भोले नैन।

88.
क्रुद्ध सूर्य का
सुन युद्ध उद्घोष
काँपती छाँव।

89.
रँगें रश्मियाँ
सप्तद्वीपा धरा को
सतरंगों से।

90.
रँगे सूरज
सागर को सिंदूरी
मिटा के दूरी।

91.
मचला रूप
ओढ़ी जो धरती ने
उजली धूप।

92.
धूप चोर-सी
पल-पल खिसके
छाँव बेजार।

93.
धूप की उम्र
चढ़ती उतरती
रंग भरती।

94.
धूप चटोरी
पत्तों का रंग चाट
चढ़ी आकाश।

95.
प्यास की मारी
धूप क्यारी-क्यारी जा
चाटती ओस।

96.
धूप ने छुआ
लाज से घुली बर्फ
जा लुकी अर्श।

97.
बड़ी सुहाए,
सुखद साँझ जब
ग्रीष्म तपाए।

98.
ग्रीष्म की बेड़ी
मौसम लुहार ने
काटी वर्षा से।

99.
भटक गई
मद्धिम दोपहरी
मेघों के व्यूह।

100.
नर्म-सी धूप
रेशमी कँगूरों के
काँधों पे सोई।

101.
मचला रूप
ओढ़ी जो धरती ने
उजली धूप।

102.
नीड़ों से झाँकें
सूर्य का पारा मापें
कातर पंछी।

103.
मन हुलसे
छूने को आसमान
पंख झुलसें।

104.
धूल ने खेली
अंबर संग होली
मचा कहर।

105.
सूर्य की चाल
सूखे जल के प्राण
हवा निढाल।

106.
सूर्य निगोड़ा
जवानी के जोम में
उगले आग।

107.
गुस्से पे काबू
रखने में भलाई
सूरज बाबू।

108.
ग्रीष्म शैतान
निशा की आयु चुरा
दिन उत्थान।

109.
गंगा की रेत
आईने-सी हिलती
आसमान में।

110.
झुलस रहे
छाँव की तलाश में
बेचारे पेड़।

111.
सूरज तपे
पवन लू नहाए
काया जलाए।

112.
भानु भड़के
सूनी गली सड़कें
रौला उदास।

113.
निष्ठुर गर्मी
अलसाते दिन औ
डसती रातें।

114.
कुन्दन धूप
सूखे कुम्भ औ कूप
कंठ व्याकुल।

115.
ग्रीष्म प्रचंड
तरु देते आनंद
पौन दुलारे।

116.
लू का तमाचा
खटकाए किवाड़
करती वार।

117.
पशु औ पक्षी
पाएँ तरु की गोद
शीतल छाँव।

118.
क्रोध से तेरे
वसुधा कुम्हलाई
हवा रुआँसी।

119.
सूर्य आतंकी
डर से हुए सूने
हाट-बाज़ार।

120.
पवन-प्यासा
सूखे ताल-तलैया
फिरे व्याकुल।

121.
भानु को ज्वर
दुख में तपे धरा
सूखा सागर।

122.
पत्ते औ फूल
हँसें ना मुसकाएँ
सिकुड़े जाएँ।

123.
सूखे हलक
पक्षी ताकें फलक
बूँद की आस।

124.
गरमी आई
अमरस सौगात
लस्सी ठंडाई।

125.
नदी का नीर
सहे गर्मी की पीर
सूखे का रोग।

126.
ताल सिसके
पूरा जल पी गया
सूर्य निगोड़ा।

127.
हवा चलती
जेठ की दोपहरी
क्यूँ नंगे पाँव।

128.
सावन आया
बादलों के डेरे को
काँधे पे लाया।

129.
प्रीत के गीत
बिजली की पायल
नाचती बूँदें।

130.
भीगते कागा
गर्वीले बादलों से
ठानते रार।

131.
बरसें मेघ
सदानीरा झीलों में
न्यारा आवेश।

132.
पीकर सुधा
छलकते बादल
हर्षे वसुधा।

133.
खुल के हँसें
बादल जो नभ में
घना भिगोएँ।

134.
डरे बादल
तड़ित रेखाओं से
सिहरे-काँपें।

135.
गुत्थम-गुत्था
होते जब बादल
बजते ढोल।

136.
तप तो कड़ा
सिंधु से छागल ढो
भरते घड़ा।

137.
लोभ ना घटा
पी पी के सागर जल
लो पेट फटा।

138.
रिमझिम के
मृदु गीतों को सुन
भीगता मन।

139.
दूर साजन
कुण्ठित अभिलाषा
आया चौमासा।

140.
मस्त हवाएँ
मन पारा चढ़ाएँ
फुहारें लाएँ।

141.
श्याम घटाएँ
बरसे बैरी नैन
पिया ना आए।

142.
बदरा हर्षे
चुभता है चौमासा
नैना बरसें।

143.
चटका कोना
बंजर धरती का
मेह निहारे।

144.
आए गुर्राए
ला बंजारे बादल
खाली छागल।

145.
बादल ओट
छुपा यूँ चाँद ज्यों हो
तारों से कुट्टी।

146.
पी बसे दूर
सावन रुत आए
खले सिंदूर।

147.
चुप्पी को तोड़
बादल यूँ दहाड़े
टूटे किनारे।

148.
फूटी रुलाई
बादलों की आँख से
धरा नहाई।

149.
हँसके तोड़े
झरनों की पायल
घाटी का मौन।

150.
सार नदी का
जल पनघट का
हँसी ठिठोली।

151.
काया विस्तीर्ण
बाढ़ की विभीषिका
लीले शिखर।

152.
लहरें आके
हस्ताक्षर छोड़तीं
तटों के नाम।

153.
टँके सितारे
सरिता के आँचल
हँसते तारे।

154.
धीमें-धीमें लें
लहरें करवट
सिहरे नैया।

155.
सीली हवाएँ
विछोह के आँसू में
डूब के आएँ।

156.
सुनके झूमी
कृषक किशोरी यूँ
बूँदों के गीत।

157.
हर्षित प्राण
बरसीं रसधार
गाती फुहार।

158.
सजल हुए
धरा के शुष्क नैन
पी के फुहार।

159.
डोलने लगी
सरिता की धारा में
लहर काया।

160.
सूखे रेतीले
पनघटी किनारे
हुए पनीले।

161.
मृदु फुहारें
दूर्वादल आँचल
लगीं भिगोने।

162.
झरे बरखा
मेघों की गरजन
सिरजे गीत।

163.
भीगी अखियाँ
पावस फुहार में
पिया संग को।

164.
कानों को लगे
वर्षा की टप-टप
ज्यों तेरी चाप।

165.
नवल धार
खिल उठा धरा का
प्यासा था मन।

166
शीत लहर
सूने हाट-बाज़ार
सोए शहर।

167.
शीत-आतंक
हवा रूप बदले
मारती डंक।

168.
काँपें हवाएँ
छुएँ जो सीत भीगी
नंगी शिलाएँ।

169.
चमकी धूप
हिम-कण दमके
माणिक रूप।

170.
जाने पहाड़
गरम शाल ओढ़
धूप का मोल।

171.
चूमें तुषार
कोमल कुसुमों के
नर्म कपोल।

172.
लटक रही
पेडों पे कुहासे की
साँवली सौर।

173.
दिन शर्मीले
सिकुड़-सिकुड़ बैठते
हो सीले-गीले।

174.
शीत के शर
जीना किया हराम
धूप जर्जर।

175.
छाया सन्नाटा
शीत ने मारा जब
सूर्य को चाँटा।

176.
सर्दी की भोर
हवा का सुन शोर
भागा कोहरा।

177.
घाटी के सीने
हवा की बरछियाँ
करें आघात।

178.
सौम्य शरद
कुनकुनी धूप में
करे स्नान।

179.
सर्दी में जमें
जो बादलों के आँसू
हो हिमपात।

180.
सूर्य ताप को
पी के शीतल हवा
मुँह चिढ़ाए।

181.
शीत वितान
जब तानें हवाएँ
ठिठुरे धरा।

182.
पंछी काँपते
गुम है सरगम
जड़ संगीत।

183.
सहमी नदी
पनीली बहार के
टपकें आँसू।

184.
ठंडे देश में
रिश्ते अकड़ जाएँ
ठंडे जज़्बात।

185.
शीत में भानु
ऐसा भाए ज्यों फाग
पिया का साथ।

186.
सर्दी सूर्य का
करे अपहरण
कैसी निष्ठुर।

187.
सुलगी आग
तसले की छाती में
बाँटे सुकून।

188.
कंपित भाव
शब्द अकड़े गात
शीत में सुन्न।

189.
शीत कटारी
ऋतु ने मारी भानु
क्या उपचार।

190.
खिले चाँदनी
जैसे धूप जो छुए
हिम कपोल।

191.
शीत की धूप
लिपट कर माँ-सी
दे कोसा प्यार।

192.
सोई है झील
श्वेत चादर तले
अखियाँ मूँदे।

193.
हिम पिघले
पा स्पर्श अरुण का
टपके नेह।

194.
शीत बजाए
ठिठुरन का राग
नाचता गात।

195.
उलझा सूर्य
कोहरे के जाल में
मिले न राह।

196.
शीत के आते
मौसम के अंदाज़
आँखें तरेरें।

197.
बिन जंगल
साँय-साँय ठंड में
खड़े पहाड़।

198.
सूर्य-स्पर्श से
पानी-पानी हिम
मारे शर्म के।

199.
शीत-लहर
नन्हे पंछी दुबके
शाखों की ओट।

200.
नदिया क्लांत
ओढ़े श्वेत लिहाफ
सोई हो शांत।

201.
साँझ को लौटे
शिथिल हुई धूप
जाड़ों की ऋतु।

202.
क्या हिम वृष्टि
कायनात दमकी
चकित दृष्टि।

203.
चमका सूर्य
हीरों जड़ी शाखाएँ
झलके नूर।

204.
हिम यूँ झड़ी
शाख-शाख लिपटी
माणिक लड़ी।

205.
हिम जो आए
दिन के उजाले में
चाँदनी छाए।

206.
तुषाराघात
अलौकिक छवियाँ-
रात में प्रातः।

207.
कंचन काया
हिम आभूषणों ने
वन सजाया।

208.
बत्तियाँ जलीं
तुषार के होठों पे
हँसी आ खिली।

209.
बर्फीली आँधी
नग्न खड़े पेड़ों के
प्राण ले मानी।

210.
हिम उतरा
ठुमक-ठुमक के
घाटी की गोद।

211.
हिम की ढाह
चकित हैं चौराहे
गुम है राह।

212.
हिम के छौने
करें अठखेलियाँ
धरा बिछौने।

213.
तुषार छाए
लगे परछाई-सी
सारी खुदाई।

214.
रवि सोया
सघन कोहरे की
ओढ़ी रजाई।

215.
कोहरा डटे
घोंसलों में परिंदे
निस्पन्द सटे।

216.
घनी धुंध में
तैरते-से लगते
सारे मकान।

217.
धुंध पसरी
डूबा ज्यों सारा जग
गहरे ध्यान।

218.
ओढ़े जो धरा
धुंध का परिधान
करे हैरान।

219.
पाला लटके
वृक्ष की बाँह धरे
गिर ना जाऊँ।

220.
धुंध डराए
घोंसले में चिड़िया
दुबकी जाए।

221.
धुंध कमाल
डूबे-से लगे सब
झील व ताल।

222.
मुख ढाँप के
बैठी है दुल्हन सी
धुंध में धूप।

223.
सूर्य-रथ का
घोड़ा हुआ लापता
सूर्य बेबस।

224.
धुंध ने घेरा
धूप पड़ी उदास
ढाँप चेहरा।

225.
भोर ने ओढ़ा
कोहरे का दुपट्टा
धूप नाराज़। ❑

5. रिश्तों की डोर

1.
मातृ-दिवस
माँ तेरी स्मृतियों से
नैना सजल।

2.
माँ याद आए
बालों में अँगुली जो
हवा फिराए।

3.
वैद अचूक
सीने से लगाके माँ
निवारे हूक।

4.
रोम भी खिले
सपने में भी गले
माँ बेटी मिलें।

5.
माँ की मुस्कान
हर लेती पल में
सारी थकान।

6.
तेरी कहानी
समाप्त होते ही हो
बेटी निमानी।

7.
तू तो फरिश्ता
विस्मय है तुझसा
ना दूजा रिश्ता।

8.
आँसू छिपा के
मुस्कुराने की कला
विशेषज्ञ माँ।

9.
बेबसी पीती
दुखों को धोए, गूँधे
आटे में दर्द।

10.
माँ दुआओं-सी
महकी फिज़ाओं सी
तरु छाँव-सी।

11.
माँ अनमोल
मृदु जिसके बोल
ममता पगे।

12.
कैसी अनोखी
माँ ममता लुटाए
तो चैन पाए।

13.
माँ सोंधी गंध
है प्यार की बयार
भीनी फुहार।

14.
नेह-प्रेम की
मूरत माँ छलके
सुधा कलश।

15.
माँ चंदन है
माँ कपूर बनके
बाँटे सुगंध।

16.
खुशनसीब
पाएँ माँ की ममता
रहें करीब।

17.
छुपाए पीर
रचा समाज ने क्यूँ
पिता गम्भीर।

18.
पिता है गर्व
संतान तो पिता की
आस्था का सर्ग।

19.
पिता गुमान
बच्चों का आसमान
भरें उड़ान।

20.
पिता सोपान
काँधे पे पग धर
देखें जहान।

21.
जुदा प्रवृति
जीवन भर खटे
ले ना निवृत्ति।

22.
स्वप्न साकार
पितृ बल पे उड़ें
पंख पसार।

23.
आर्या आरोही
अँगना में फूल ज्यों
चम्पा औ जूही।

24.
नन्हे फरिश्ते
कुटुम्ब के खिलौने
घर का स्वर्ग।

25.
आ नाती पोते
घर आँगन में ये
खुशियाँ बोते।

26.
कोमल फूल
मन-दर्पण पर
ज़रा ना धूल।

27.
प्यारी मुस्कान
मुग्ध करे मन को
हरे थकान।

28.
खुशी का पूर
बच्चों का बतियाना
उदासी दूर।

29.
नन्हों का हाथ
अँगुली जब थामें
तृप्त हो आस।

30.
ठुमक चले
माँ के मन आशाएँ
सपने पलें।

31.
नन्ही की हँसी
ज्यों भोर की किरणें
ताज़गी-भरी।

32.
बच्चों का प्यार
कल-कल निर्झर
आनन्द धार।

33.
तोतलापन
खोया बचपन का
निर्मल मन।

34.
निश्छल हँसी
केवल संगिनी क्यों
बचपन की।

35.
बचपन क्यों
यादों की भेंट थमा
लेता विदाई।

36.
बचपन तो
जीवन आकाश का
चाँद सलोना।

37.
महका जाएँ
बचपन की यादें
ज्यों अमराई।

38.
रिश्तों के पौधे
पनपें तो खिलते
फूल दुर्लभ।

39.
कुचले रिश्ते
वक्त के पग तले
मृदु दूब से।

40.
भाप की भाँति
गायब हुए जाते
आज के रिश्ते।

41.
स्वार्थ रंग में
रंगे हैं अनुबंध
हवा संबंध।

42.
सिल दिए हैं
मेरी प्रीत के ज़ख्म
तेरी याद ने।

43.
रिश्ते अनाम
उमर की तमाम
भरपाई में।

44.
छिनीं दुआएँ
लुटी हैं बरकतें
बेनाम रिश्ते।

45.
फिसल गए
बरसों सँवारे जो
रिश्ते बेचूक।

46.
चाँद-से रिश्ते
अमावसी हो गए
ईर्ष्या में घुले।

47.
नारी है पूज्य
सृष्टि की जननी है
देवों के तुल्य।

48.

सूखी है नमीं
प्यार की हुई जब
रिश्तों में कमी। ❑

6. जीवन तरंग

1.
याद की तीली
फिर सुलगा गई
बीती बतियाँ।

2.
आँसू कमाल
बेज़ुबाँ होकर भी
कह दें हाल।

3.
लिपट सोईं
मरमरी ख्वाबों से
पनीली आँखें।

4.
ढरकें अश्रु
नयनों के कोरों की
धोएँ घुटन।

5.
अश्रु-सिंचित
है हास बिन तेरे
अँधेरे घेरें।

6.
आँखों में प्यार
तो दुस्साहस पी ले
आँसू-से गीले।

7.
आहत पल
जब-जब धधकें
बुझाएँ आँसू।

8.
खुशी या गम
कोरों को सीला करे
भावों की नमीं।

9.
सहमे आँसू
आँख की कोटर में
बहें ना सूखें।

10.
रोके खड़ा है
भीतर का सैलाब
कोरों पे आँसू।

11.
आँसू ना होते
नारी की आँखें होतीं
बंजर खेत।

12.
अक्सर जीतें
ज़िद्द की जंग में तो
सिर्फ दूरियाँ।

13.
वीरान व्यथा
बुनती सन्नाटे का
मकड़जाल।

14.
बसना चाहो
बसो किसी दिल में
या दुआओं में।

15.
हौसला ज़िंदा
समंदर को लाँघे
नन्हा परिंदा।

16.
आरज़ू बीजो
जो, हौसलों का आब
महकें ख्वाब।

17.
अद्भुत दोस्त
बोलों के अंगार से
जलाएँ मन।

18.
बनाओ पुल
जुड़ सकें अपने
छूटे जो पीछे।

19.
गुदगुदाएँ
मदमाती यादें आ
सूने क्षण में।

20.
माँगूँ प्रभु से
दे दो मन ऐसा कि
कुछ ना माँगे।

21.
भाव पकड़ें
भाषा की अँगुली तो
पाएँ मंज़िल।

22.
तेल ना बाती
जले दुख का दीया
दिन औ राती।

23.
शब्दों से यदि
नप जाता दुख तो
आँसू ना होते।

24.
चौका देता है
कोई खुल के हँसे
इस दौर में।

25.
कुछ दें ना दें
धोखा अवश्य देंगे
तेरे अपने।

26.
बीता पल यूँ
दूर चला जाता ज्यूँ
बहता पानी।

27.
होए मिलन
आत्मा और देह का
बुनें सपन।

28.
बहती रही
जीवन के पानी पे
उम्र की नाव।

29.
चढ़ें दिलों पे
जब अर्गलाएँ, हो
नभ सीमित।

30.
श्रम का मोल
जो जानता तूफां, ना
उड़ाता नीड़।

31.
आँखें हैं स्वस्थ
झुलस रहे स्वप्न
कैसी ये आग?

32.
माथे पे लिखी
इबारत को पढ़े
केवल वक्त।

33.
सुख आभास
संबंध मिठास ज्यों
पुष्प सुवास।

34.
त्यागो कुदाल
आस्थाओं की ज़मीन
करे जो पोली।

35.
मदांध जंग
जाने ना है इक-सा
रक्त का रंग।

36.
तुम्हारा साथ
अमावसी जीवन
लगे उजास।

37.
नित्य लुभाऊँ
बिफरती ज़िंदगी
काँधे से लगा।

38.
बुझे ना प्यास
जीवन जल खारा
व्याकुल घाट।

39.
मूक हैं शब्द
ज़ुबाँ की सीढ़ी चढ़
छू लेते दिल।

40.
दिल तिड़के
आँखें सह ना पाएँ
दर्द बँटाएँ।

41.
कविता होती
खिंडे अनुभवों के
सिमटे रेशे।

42.
विदा ना लेते
क्यूँ सावनी बादल
नारी नैनों से।

43.
जन्म से ब्याहीं
कंठ से सिसकियाँ
छोड़ें ना साथ।

44.
दर्ज ना होते
ठीकरों के दिल पे
प्रीत के चिह्न।

45.
टूटी बाँसुरी
मन कालिंदी शुष्क
गूँजे ना तान।

46.
ढो-ढो के मरे
रिश्तों की मनुहार
अजब सज़ा।

47.
दुख का छौना
छाती की गलियों में
मचाए रार।

48.
पूछ के हाल
सिले हुए ज़ख्मों के
टाँके ना तोड़ो।

49.
छोटे थे पंख
छूती कैसे आकाश
धुँआती रही।

50.
दिन गुज़रा
लम्हों को पकड़ते
रीते हैं हाथ।

51.
श्वासों के मोती
बिखरी हैं लड़ियाँ
पूर्ण घड़ियाँ।

52.
बुझे पलों को
जगाने की चेष्टा में
बुझी ज़िंदगी।

53.
स्वप्न हैरान
नयन सेज पर
पसरे आँसू।

54.
देता आकार
कवि कल्पनाओं को
बन कुम्हार।

55.
उम्र जो बीते
समय संग यादें
हों धारदार।

56.
मन तरसे
किनारों की छाती में
इश्क धड़के।

57.
युगों से जन्मीं
समय की कोख ने
सिर्फ तारीखें।

58.
रखना ख्याल
तिड़का जो भरोसा
बहे विश्वास।

59.
खामोशियों से
इश्क करती हैं तो
सिर्फ शिलाएँ।

60.
खुदा ने लिखा
शिला के नसीब में
योगी का साथ।

61.
बूँद का प्यासा
चातक हो विकल
आस ना हारे।

62.
सुलगना है
सुलगो ऊर्जा वास्ते
धुँआने को ना।

63.
संतान व्यस्त
एकल बुढ़ापे में
जीवन त्रस्त।

64.
बढती जाए
उम्र के साथ-साथ
आँखों की नमीं।

65.
सहमे बैठे
होंठों की मुडेर पे
अव्यक्त शब्द।

66.
बोलती आँखें
ये होंठ हैं कायर
कह ना पाते।

67.
बंसी के स्वप्न
पूरे करे पवन
भरके श्वास।

68.
तैरते रहे
सपनों के कुंड में
क्यूँ आजीवन।

69.
नैनों से हुई
नींद की अनबन
सहमें स्वप्न।

70.
रचनाकार
करें व्यथा शृंगार
श्रम अपार।

71.
सुख क्या ढला
दुख की परछाई
हो गई बला।

72.
द्वेष बीजों से
नागफनी उगती
मन क्यारी में।

73.
जी उठें रास्ते
राहगीरों के पाँव
जो छू लें उन्हें।

74.
शून्य अलाव
सोच की चिंगारियाँ
फूटें अथाह।

75.
साँझ ढलते
ढलें परछाइयाँ
दर्द ढलें ना।

76.
दुख से छीजें
टूटें बाहर हँसें
भीतर बंध।

77.
दुख की बाढ़
सूझा आर ना पार
आकंठ डूबी।

78.
मौत से मिलें
दो घड़ियाँ उधार
वही ज़िंदगी।

79.
झरें जो आँसू
कलम की आँख से
बनें अक्षर।

80.
स्वप्न ना होते
सुहागिन होती क्या
नींद हमारी।

81.
तुम मिले थे
बादलों की तरह
खोजूँ कहाँ जा!

82.
भाईं क्या उसे
मेरी मुस्कुराहटें
साथ ले गया।

83.
ख्वाहिशें चढ़ें
जीवन की सीढ़ियाँ
अक्सर गिरें।

84.
बरबस आ
मन की चौखट पे
बैठे उम्मीद।

85
ढो-ढो कर ना
अतीत के शव को
तोड़ो कमर।

86.
सुलगी आस
प्यासे अधर खोजें
तरल श्वास।

87.
दर्द सह के
हथेली महकाना
जाने गुलाब।

88.
कौन कुम्हार
गढ़े दुख का घड़ा
फूटे ना कभी।

89.
कहे बाँसुरी
रागिनी की कथाएँ
मन व्यथाएँ।

90.
मौन किताबें
करें चपल बातें
सदुपदेश।

91.
देके तन्हाई
संग ले गया साया
छिपता सूर्य।

92.
सोख लो मुझे
बादल ज्यों वाष्प को
बरसे प्यार।

93.
ऑक्सीजन दें
ढलते जीवन को
मृदु स्मृतियाँ।

94.
पोंछें जो आँसू
अपनों के हाथ तो
सुख संसार।

95.
जुड़े आ सुख
घटे जिसमें दुख
कहाए घर।

96.
टूटेगा दिल
अपनों के हाथों ही
सोचा नहीं था।

97.
पीड़ा के रिश्ते
सपनों का संबंध
बचा है शेष।

98.
बिके सम्मान
चतुराई के मोल
सस्ता है सौदा।

99.
सभी मुझ से।
कोई पूर्ण इसां ना
मिला ढूँढे से।

100.
बाट निहारे
चकोर-सी अखियाँ
मन हुलसे।

101.
बहती रही
समय की नदी पे
उम्र की कश्ती।

102.
जीवन धुंध
मनवा गंगाधार
फिर भी प्यासा।

103.
फैला यूँ डर
बेखौफ लगे बस
मौत का घर।

104.
बैठे जो पास
खुल जाएँगे स्वयं
दिल के राज़।

105.
डोलते तारे
चाँद के डाकिए से
पूछते पता।

106.
राहें बाँटतीं
मिलन औ जुदाई
दोहरा रूप।

107.
आज भी स्मृति
शीशे-सी चमकती
मन में बसी।

108.
शब्दों के पक्षी
पैनी चोंचों से करें
लहूलुहान।

109.
जीवन पहेली
कविता है सहेली
सुने मन की।

110.
जीते जी शूल
मरने पर फूल
अजब रस्में।

111.
सगे-बेगाने
चुप वंशी की धुन
दर्द सयाने।

112.
उम्र की वंशी
अज्ञात ताल पर
सुर बदले।

113.
निर्मम जहाँ
छीने निर्झर हँसी
बढ़े जो उम्र।

114.
सच्चे प्यार की
कथाएँ ही कथाएँ
सच है कम।

115.
लाख छू आएँ
चिड़ियाँ आकाश को
प्यार नीड़ से।

116.
गरीबी में हो
कलह की खेती औ
धूमिल गुण।

117.
कोमल स्पर्श
बदल दे मौसम
तन-मन का।

118.
भोर उन्हीं की
जो तय कर लेते
घने अँधेरे।

119.
काँच-सा कच्चा
टूटे यदि विश्वास
जुड़ ना पाए।

120.
ठेल ना पाई
उन्माद सपनों के
पीड़ा ही बाँटी।

121.
मन की व्यथा
पाषाण ही सुनते
पूजा गृह में।

122.
मिटे विषाद
मिले जो अपनों का
भुज-बन्धन।

123.
पड़ें चरण
दुर्योधन के जहाँ
कहाँ शरण!

124.
थक के सोईं
वक्त की देहरी पे
मेरी आशाएँ।

125.
सदी का नव
शिशु जन्मा लेकर
नए करिश्में।

126.
बेटी जनमी
दिल-संग धड़की
हुई पराई।

127.
आँगन सूना
आस भरी दो आँखें
चौखट लगीं।

128.
रहें समीप
ज्यों मोती और सीप
खुश नसीब।

129.
आर्त्त मन में
कब उग पाते हैं
आस के स्वप्न!

130.
नन्ही गौरैया
पंजों से हस्ताक्षर
करे ज़मीं पर।

131.
मोती की बूँदें
पलकों की कोरों पे
स्वर्ण प्रतीक।

132.
हँसी के पीछे
छिपा दर्द का तम
बीते वक्त का।

133.
पर्वत रोया
दर्द जो पिघला तो
फूटा झरना।

134.
खिले जो ख्वाब
भीगी हैं हसरतें
उनींदी आँखें।

135.
अनूठा प्रेम
दीया और पतंगा
दोनों जलते।

136.
हद प्यार की
छलक गईं आँखें
तेरे ज़िक्र से।

137.
नेह तो होता
दो का पहाड़ा, कभी
भूलता नहीं।

138.
राहें ही राहें
होती मुहब्बत में
मंज़िल नहीं।

139.
भोर सिंदूरी
नव वर्ष के माथे
तिलक करे।

140.
प्रेम का दीप
जले हर आँगन
मिटे विषाद।

141.
मन-अँगना
खुशियाँ चहकें ज्यों
पाहुन आए।

142.
कोई सूरत
है ना कोई आकार
प्यार तो प्यार।

143.
प्यार केवल
दिलों की सच्ची चाह
प्रीत अथाह।

144.
वो प्रीत कैसी
मोहताज होती जो
खास तिथि की।

145.
कोई ना सीमा
प्यार तो होता बस
जीवन बीमा।

146.
प्यार में दगा
जीवन में इससे
ना बड़ी सज़ा।

147.
सूखी है नमीं
प्यार की हुई जब
रिश्तों में कमी।

148.
हो गया चोरी
हमारे शऊर से
अक्षर 'हम'।

149.
एकल भाए
'हम' किया पराया
फिरें बौराए।

150.
'हम' में दम
'हम' ही घटा सके
दुःख का तम।

151.
'हम' अपना
मुट्ठी में बाँध सूर्य
भाग्य चमका।

152.
'हम' है गर्व
जीवन का आनन्द
पावन पर्व।

153.
घुटती साँसें
आत्मग्राही पासों ने
हृदय फाँसे।

154.
स्वार्थ के शूल
छलनी हुआ सीना
जीवन धूल।

155.
स्वार्थ ना छीजा
निश्चेतन मन ना
ज़रा पसीजा।

156.
रुग्ण आनन्द
भुजाओं के फासले
ईर्ष्या व द्वन्द्व।

157.
परहित में
जो जीवन हो होम
छू ले वो व्योम।

158.
धर्मार्थ करे
जितना घट रीते
चौगुना भरे।

159.
भागती दूर
पीछा करो खुशी का
तितली नाईं।

160.
स्वयं ही खोते
होकर के उदास
खुशी के क्षण।

161.
खड़ी ज़िंदगी
समस्याओं के घाट
सूझे ना बाट।

162.
वक्त की चाल
थामने की चेष्टा में
जलेंगे हाथ।

163.
थर्राए मन
समय का तेवर
दे कैसा वर?

164.
वक्त का बल
ना कपट ना छल
है भाग्यचक्र।

165.
सबक देतीं
समय की सख्तियाँ
माँजें जीवन।

166.
डरना भला
समय से उलझे
कटेगा गला।

167.
वक्त कराता
भले-बुरे का ज्ञान
हम अंजान।

168.
वक्त का चाक
बदलता रेखाएँ
बिना कुम्हार।

169.
यादों का चोर
जाने हैं गुप्त द्वार
लूटे करार।

170.
आँखें क्या मिचीं
खुल गई यादों की
बँधी गठरी।

171.
जब भी उगे
स्मृतियों के पलाश
सुलगा मन।

172.
यादें तुम्हारी
ज्यों मेंहदी का बूटा
मन अँगना।

173.
बड़ी हठी है
स्मृतियों की केंचुली
कैसे उतारूँ?

174.
टँगी हैं यादें
घरों की चौखट पे
टूटे रिश्तों की।

175.
बीते लम्हों से
सरकी चिलमन
सुलगा दर्द।

176.
आभूषणों से
सँभाले हैं दिल में
गम तुम्हारे।

177.
चोरनी यादें
नींद चुराके डाले
चैन पे डाका।

178.
यादों के मेघ
घिरें बेमौसम औ
बरसें नैन।

179.
सर्द यादों से
जमें बेबस लम्हें
पिघलें आँसू।

180.
गीली काठ-सी
सुलगती यादों से
धुँआई आँखें।

181.
महकें यादें
इच्छाएँ उकसाएँ
लम्हें लुटेरे।

182.
यादें सिंदूरी
बसे जिया में जैसे
मृग कस्तूरी।

183.
यादों की ओस
जब-जब पड़ती
भीगता मन।

184.
मधुबनी सी
तेरी यादें ले डूबीं
प्रेम नदी में।

185.
यादें तो सदा
उड़ें पखेरू बन
मन गगन।

186.
छलकें रोएँ
यादों की बुक्कल में
मुँह छुपाए।

187.
रेत के घर
नन्हे थे सपने जो
छूते आकाश।

188.
यादें थिरकें
साँसों की लय पर
कभी ना थमें।

189.
मिला ना ठौर
यादों के बिछौने पे
लीं करवटें।

190.
जलें मन में
तेरी पावन यादें
जोत बन के।

191.
गोते खाती है
यादों के दरिया में
मन की नाव।

192.
मंद पवन
सहलाए बदन
माँ के हाथों-सी।

193.
अश्रु बन के
छलकते दिल के
दर्द पुराने।

194.
साँस-साँस ने
पुकारा तेरा नाम
भूलती कैसे।

195.
स्मृति के फूल
पतझड़ ऋतु में भी
सूखें ना कभी।

196.
रची हैं यादें
मन की हथेली पे
मेंहदी नाईं।

197.
बहे अबाध
नयन नदिया से
यादों की धार।

198.
माँ तेरी यादें
फटा मन तुरपे
स्नेह टाँकों से।

199.
लिपटी रहे
महक स्मृतियों में
बीते दिनों की।

200.
मन कहार
यादों की डोली सदा
ढोए फिरता।

201.
खुदी हैं यादें
मन की हथेली पे
भाग्य रेखा-सी।

202.
गश्त लगाए
यादों के बाज़ार में
मेरी तन्हाई।

203.
बीते कल की
धुँधली-सी तस्वीरें
होती हैं यादें।

204.
यादें टपकीं
आँखों की मुँडेर से
शबनम-सी।

205.
आँखें बरसीं
यादों का मोर नाचा
सारी ही रात।

206.
छँटता नहीं
स्मृतियों का कोहरा
मन-वादी से। ❑

7. उत्सवा

1.
दीप माला, ज्यों
उतरी आकाश से
तारों की लड़ी।

2.
दीप वर्तिका
तिल-तिल जलके
बाँटे प्रकाश।

3.
ज्ञान शिखा से
अज्ञान का अँधेरा
होता रोशन।

4.
उजड़ी माँग
अमावस की भरें
दीप कतारें।

5.
सतत जले
आस्था की डोर थामे
नन्हा दीपक।

6.
दीप सलोने
दिप-दिप करते
भरें उमंगें।

7.
नन्हें दीपों की
लहराती लौ काटे
सघन तम।

8.
हठी दीपों की
कमसिन लौ देती
तम को मात।

9.
स्याह रात का
कंपित हृदय हो
नन्हीं-सी लौ से।

10.
दीप-त्योहार
अमावस की रात
नभ में कर्फ्यू।

11.
दीप कर्म से
प्रज्वलित हो आस
कटे अँधेरा।

12.
तन्वी-सी बाती
दीप-नेह से भीगी
जले प्यार में।

13.
क्रूर निशा ने
ताना स्याह अँधेरा
दीप ना हारा।

14.
भूखे प्यासों की
क्षुधा मिटा जलाओ
होंठों पे दीप।

15.
आज खुदाई
रोशनी में नहाई
ओढ़ के खुशी।

16.
बेमोल माटी
गढ़ती है दीपक
साहस भरा।

17.
नन्हे-से दिए
धरें दीप्त मुकुट
अमा के शीष।

18.
दीया औ बाती
अमा का स्याह तन
उजला बनाती।

19.
दिपदिपाएँ
रूई की वर्तिकाएँ
दीप मुग्ध हों।

20.
दीपशिखा से
तमस भी भ्रमित
ढूँढे अँधेरा।

21.
अंतर ज्योत
यदि हो आलोकित
सदा दीवाली।

22.
ज्ञान दीप से
तमस का साम्राज्य
हो प्रकाशित।

23.
आत्म दीप की
ज्योत हो प्रज्वलित
आनन्द प्राप्ति।

24.
करे आरम्भ
नई जीवन शैली
संकल्प दीप।

25
तोड़ा साहस
दीयों की नन्हीं लौ ने
हवाएँ स्तब्ध।

26.
चढ़ मुंडेर
दीपक ललकारे
तम ना हारे।

27.
बनो दीपक
परहित के लिए
भरो उजास।

28.
दीवाली दीप
हैं प्रेम के प्रतीक
लाएँ समीप।

29.
दीप का वक्ष
चूमने को शिखाएँ
तन जलाएँ।

30.
झिलमिलाती
खुशियाँ अटारी पे
बैठ मुस्काएँ।

31.
दीप-शिखाएँ
फैलाएँ शुभ्रता औ
चाँद लजाए।

32.
सर्वत्र जलें
प्रेम के दीपक तो
नित्य दीवाली।

33.
दीप-शृंखला
ज्यों उतरी नभ से
तारक-लड़ी।

34.
मढ़ी रंगोली
दीप करें ठिठोली
साँझ हर्षाई।

35.
आज वसुधा
रौशनी में नहाई
नील नभ-सी।

36.
वंदनवार
सजे रंगोली द्वार
दीप-त्योहार।

37.
माँग सिंदूर
माथे पे कुमकुम
हँसे सदैव।

38.
चूड़ी-बिंदिया
पायल मेंहदी ही
सुख संसार।

39.
प्रीत पिया की
बने मेरा गहना
दमकूँ नित।

40.
चाँद उतरे
आज हर अँगना
बनके खुशी।

41.
चाँद धरा का
जिए चंद्रमा संग
जन्मों तक।

42.
करवाचौथ
खिले हैं दो-दो चाँद
सदके जाऊँ।

43.
रोशन रहे
नित चाँद धरा का
यही कामना।

44.
तन्वी-से तार
बाँधे भाई के हाथ
बहना प्यार।

45.
परम्पराएँ
भाई-बहन संग
जीना सिखाएँ।

46.
बड़े ही सच्चे
अनोखी प्रीत बाँधें
ये धागे कच्चे।

47.
कोमल धागा
दुआओं से सींचा है
कलाई बाँधा।

48.
भाई-बहन
अनुपम संबंध
नेह-आधार।

49.
बहन सदा
माँगे सुख भाई का
साँस की लय।

50.
कोमल डोरी
शक्ति देख लजाए,
लौह जंजीर।

51.
भाग्यवान हैं
जिनकी कलाई से
बंधता स्नेह।

52.
उम्र पर्यंत
भाई करे स्वीकार
रक्षा का भार।

53.
बैठी विदेश
भेजे राखी संदेश
भीगी आँखों से।

54.
भाई की भेंट
हृदय से लगा के
सहेजे स्नेह।

55.
कभी ना टूटे
मृदु रिश्तों की तार
आपसी प्यार।

56.
भाई जो आएँ
क्षितिजों तक लम्बी
होएँ भुजाएँ।

57.
माँ जाई आई
स्नेह की पिटारी में
खुशियाँ लाई।

58.
भेंट दे भाई
बहन को लगे मिली
सारी खुदाई।

59.
कोमल धागा
मोती की चमकार
बढ़ाए प्यार।

60.
जात ना पात
ना मित्र-शत्रु मर्म
होली उमंग।

61.
गोरी की चूड़ी
पायल की शिंजन
आया फाल्गुन।

62.
फागुनी मस्ती
प्रेम गुँथे लिपटे
ज्यों पी का प्यार।

63.
अनजाने ही
भीगे तन-मन क्यों
बरखा बिन!

64.
हिया में प्यास
आगम का हुलास
पिया फाग में।

65
सर्द हवाएँ
विदा हुईं जो ताना
फाग वितान।

66.
बाट पिया की
कोरों पे रख फाग।
तकते नैन।

67.
अंतरतम
तार-तार को करे
फाग तरंग।

68.
छटा का ताज
गली-गली मटके
फाग पहन।

69.
पी रंग डारे
हुए लाज से गोरे
गाल गुलाबी।

70.
लाज छोड़ के
जी भर खेली गोरी
पी संग होरी।

71.
गीत मल्हार
गाए पवन झूमें
फाग बहार।

72.
ऋतु के रंग
होने लगीं अधीर।
चाहतें रंगी।

73.
धरा गगन
तन-मन मगन
मधुर धुन।

74.
हिय उल्लास
रंगों का मधुमास
फाग-आभास।

75.
होली की रीत
छलकाती गगरी
नेह व प्रीत।

76.
बाल-गोपाल
रंगे रंग गुलाल
मस्ती धमाल।

77.
उर उल्लास
सजग हुई आस
मधु-संकेत।

78.
नैन बसे पी
रूठी नींद निगोड़ी
हुई पराई।

79.
रंग मजीठा
जन्मों तक ना छूटा
प्यार का घोला।

80.
प्रीत की रीत
बनते परिणय
प्रेम पग से।

81.
नैनों की भाषा
समझाती है भेद
बिन शब्दों के।

82.
रोम-रोम में
गंध चंदनी घुली
फाल्गुन आए। ❑

❑❑❑

पिछले कुछ वर्षों में कुछ भारतीय प्रवासी महिला साहित्यकार 'हाइकु' से जुड़ी हैं। कवि-कर्म को गम्भीरता से लेते हुए सार्थक उत्कृष्ट हाइकु-सृजन किया जो शुभ संकेत है। डॉ. भावना कुँअर, डॉ. हरदीप कौर संधु, सुश्री रचना श्रीवास्तव के बाद 'अम्बर बाँचे पाती' के प्रकाशन के साथ शृंखला में एक और नाम जुड़ा है- कृष्णा वर्मा।

इनके हाइकु में ताज़गी है, 'एहसास' की धरती पर अंकुरित, आँखों देखे यथार्थ का अंकन प्रभावी है, प्रकृति से जुड़ाव और मौलिक उद्‌भावनाओं के प्रसूत बिम्ब मनोहारी हैं- ◆नदी जल में / नहा के हवाएँ, दें / सूर्य को अर्घ्य। ◆पत्तों के कानों / हवा फुसफुसाए / लोक व्यथाएँ। अंधा-धुंधवन-कटाव, पर्यावरण सुरक्षा की समस्या और अनावृष्टि के 'कारण' रेखांकित करता यह हाइकु, लक्षणा शब्द-शक्ति की बे-मिसाल कथा सँजोए है- ◆शुष्क हुए हैं / बादलों के अधर/ वन लापता। ऐसे हाइकुकार हिन्दी हाइकु का स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित करने में समर्थ हैं।

- डॉ. सुधा गुप्ता

हाइकु लिखना कठिन काम है और अच्छे हाइकु लिखना तो और भी दुष्कर है। कृष्णाजी ने सुन्दर भाव और विचार-चित्रों की 683 हाइकु की माला रूपी इस पुस्तक का प्रकाशन करके यह कठिन काम किया है। कृष्णा वर्मा जी के हाइकु ताज़गी की हवा और खुशबू लिये हुए हैं। आकाश की किताब में वो मौसम के पन्ने पलटते हुए जो देखती हैं, वह छोटी-छोटी बूँदों-सा हाइकु के रूप में कागज़ पर उतरता चला आता है। इन बूँदों में हमें प्रकृति के अनेक रूपों का अगाध सौन्दर्य, संबंधों की नरमी, मन के विविध भावों के इंद्रधनुषी रंग, उत्सवों की महक और जीवन के सारे उतार-चढ़ाव मिलते हैं। उनका मन, प्रकृति के समस्त रंगों से एक होकर जीवन की यात्रा करता हुआ सुख-दुख, प्रेम-कटुता, समर्पण और स्वार्थ सबको देखता और उसे पाती स्वरूप पाठक को देता चलता है। इस पाती में जीवन का वर्णन और उसके लिए संदेश दोनों हैं।

कृष्णाजी की इस पहली पुस्तक से ही हमें उनके सशक्त लेखन और सुन्दर चित्रांकन की क्षमता का पता चलता है। उन्हें अनेक बधाई! उनकी यह पुस्तक लोकप्रिय और लोकप्रेरक होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

- डॉ. शैलजा सक्सेना, ओंटारियो, कनाडा